नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तकों एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव®

बुक्स

हिन्दी-X

(कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए

पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 का प्रश्न-पत्र
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित

2025

संजीव प्रकाशन,
जयपुर

मूल्य : ₹ 280/-

प्रकाशक :
संजीव प्रकाशन
धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
जयपुर-3
email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

मूल्य : ₹ 280.00

लेजर टाइपसैटिंग :
संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

मुद्रक :
पंजाबी प्रेस, जयपुर

★ ★ ★ ★ ★

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

हिन्दी X

इस विषय में एक प्रश्न-पत्र होगा जिसकी परीक्षा योजना निम्नानुसार है–

प्रश्न-पत्र	समय (घण्टे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचना	14
व्यावहारिक-व्याकरण	10
पाठ्यपुस्तक : क्षितिज-भाग 2	34
पूरक-पुस्तक : कृतिका-भाग 2	10

1. अपठित बोध : **12**

(i) अपठित गद्यांश (छः अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

(ii) अपठित पद्यांश (छः अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) = 6

2. रचना : **14**

(i) संकेत-बिंदुओं पर आधारित किसी एक आधुनिक विषय पर निबंध-लेखन (विकल्प सहित) लगभग 300 शब्दों में 6

(ii) पत्र-लेखन (औपचारिक / अनौपचारिक पत्र) (विकल्प सहित) 4

(iii) विषय से सम्बन्धित विज्ञापन लेखन 25-50 शब्दों में (विकल्प सहित) 4

3. व्यावहारिक-व्याकरण : **10**

(दो बहुचयनात्मक, छः रिक्त स्थान पूर्ति के प्रश्न एवं एक लघूत्तरात्मक प्रश्न)

(i) पद भेद-संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय 4

(ii) उपसर्ग एवं प्रत्यय 2

(iii) संधि और समास 2

(iv) मुहावरे और लोकोक्तियाँ पाठ्यपुस्तक के आधार पर 2

4. पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पुस्तक :

पाठ्यपुस्तक : क्षितिज **34**

(i) किन्हीं दो पठित गद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी चार प्रश्न 4

(ii) किन्हीं दो पठित पद्यांशों के विकल्प में से किसी एक पर अर्थग्रहण सम्बन्धी चार प्रश्न 4

(iii) 2 दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न (1 गद्य एवं 1 पद्य भाग से विकल्प सहित)
(60-80 शब्द) 2 प्रश्न × 3 अंक = 6

(iv) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (2 गद्य एवं 2 पद्य भाग से) (40 शब्द) 4 प्रश्न × 2 अंक = 8

(v) 8 बहुचयनात्मक प्रश्न (4 गद्य एवं 4 पद्य भाग से) 8 प्रश्न × 1 अंक = 8

(vi) किन्हीं एक रचनाकार का परिचय (कवि अथवा लेखक के विकल्प में) (80-100 शब्द) 4

पूरक-पुस्तक : कृतिका **10**

(i) पाठों पर आधारित दो में से एक निबन्धात्मक प्रश्न (80-100 शब्द) 1 प्रश्न × 4 अंक = 4

(ii) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न (40 शब्द) 2 प्रश्न × 2 अंक = 4

(iii) 2 बहुचयनात्मक प्रश्न 2 प्रश्न × 1 अंक = 2

निर्धारित पाठ्यपुस्तकें :

1. **क्षितिज–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **कृतिका–भाग 2**—एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

नोट– विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास		1–12
2. तुलसीदास		12–25
3. जयशंकर प्रसाद		25–35
4. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'		35–43
5. नागार्जुन		43–54
6. मंगलेश डबराल		54–63

गद्य-खण्ड

7. नेताजी का चश्मा	स्वयं प्रकाश	64–76
8. बालगोबिन भगत	रामवृक्ष बेनीपुरी	76–88
9. लखनवी अंदाज	यशपाल	88–96
10. एक कहानी यह भी	मन्नू भण्डारी	96–108
11. नौबतखाने में इबादत	यतीन्द्र मिश्र	108–121
12. संस्कृति	भदंत आनन्द कौसल्यायन	121–130

कृतिका भाग-2

1. माता का अँचल	शिवपूजन सहाय	131–141
2. साना साना हाथ जोड़ि·····	मधु कांकरिया	141–152
3. मैं क्यों लिखता हूँ?	अज्ञेय	152–160

व्यावहारिक व्याकरण

1. पद-भेद–संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय	161–185
2. उपसर्ग	185–193
3. प्रत्यय	193–201
4. सन्धि	201–209
5. समास	209–214
6. मुहावरे और लोकोक्तियाँ	214–235

रचना

1. निबन्ध-लेखन

1. साइबर अपराध के बढ़ते कदम
   अथवा
   सूचना प्रौद्योगिकी में बढ़ते अपराध 236
2. कृत्रिम बुद्धिमता वरदान या अभिशाप
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता
   अथवा
   कृत्रिम बुद्धिमता मानवता के लिए घातक है 237
3. मेक इन इंडिया **अथवा** स्वदेशी उद्योग 238
4. आत्मनिर्भर भारत 239
5. भारत में कोरोना महामारी प्रबन्धन **अथवा** वैश्विक महामारी कोरोना 239
6. भारतीय नारी तब और अब **अथवा** राष्ट्रीय विकास में नारी की भागीदारी 240
7. राष्ट्र निर्माण में युवाओं का योगदान 241
8. बढ़ते हुए फैशन का दुष्प्रभाव **अथवा** फैशन की व्यापकता और उसका दुष्प्रभाव 242
9. प्लास्टिक थैली : पर्यावरण की दुश्मन
   अथवा
   प्लास्टिक कैरी बैग्स : असाध्य रोगवर्धक 242
10. कन्या भ्रूण हत्या : लिंगानुपात की समस्या
    अथवा
    कन्या भ्रूण हत्या : एक जघन्य अपराध 243
11. आतंकवाद : एक विश्व समस्या **अथवा** आतंकवाद : समस्या एवं समाधान 244
12. रोजगार गारंटी योजना : मनरेगा **अथवा** गाँवों के विकास की योजना : मनरेगा 245
13. राजस्थान में गहराता जल संकट **अथवा** राजस्थान में बढ़ता जल-संकट 246
14. बाल विवाह : एक अभिशाप 246
15. आतंकवाद : भारत के लिए चुनौती
    अथवा
    आतंकवाद : भारत की विकट समस्या 247
16. दहेज-प्रथा **अथवा** समाज का अभिशाप : दहेज प्रथा 248
17. वैश्विक महँगाई **अथवा** मूल्यवृद्धि : एक ज्वलन्त समस्या
    अथवा
    बढ़ती महँगाई : एक विकराल समस्या 248
18. पर्यावरण प्रदूषण **अथवा** पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निवारण 249
19. भ्रष्टाचार : एक विकराल समस्या **अथवा** भ्रष्टाचार और गिरते सांस्कृतिक मूल्य 250
20. बढ़ते वाहन : घटता जीवन-धन **अथवा** वाहन-वृद्धि से स्वास्थ्य-हानि 251
21. युवा वर्ग में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति **अथवा** नशाखोरी : एक सामाजिक अभिशाप 251
22. बेरोजगारी की समस्या और समाधान **अथवा** रोजगार के घटते साधन 252
23. नारी सशक्तीकरण 253

24. मातृभाषा और उसका महत्त्व 253
25. सर्व शिक्षा अभियान **अथवा** जीवन में शिक्षा का महत्त्व 254
26. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ 255
27. शिक्षित नारी : सुख समृद्धिकारी **अथवा** नारी-शिक्षा का महत्त्व 256
28. कम्प्यूटर शिक्षा का महत्त्व **अथवा** कम्प्यूटर शिक्षा की आवश्यकता 256
29. निरक्षरता : एक अभिशाप 257
30. विद्यार्थी जीवन में नैतिक शिक्षा की उपयोगिता
अथवा
नैतिक शिक्षा की महत्ती आवश्यकता 258
31. इन्टरनेट की उपयोगिता **अथवा** विद्यार्थी जीवन में इन्टरनेट की भूमिका 259
32. मोबाइल फोन : वरदान या अभिशाप **अथवा** मोबाइल फोन : छात्र के लिए वरदान या अभिशाप 260
33. आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी **अथवा** सूचना क्रांति के युग में भारत 260
34. कम्प्यूटर के बढ़ते कदम और प्रभाव **अथवा** कम्प्यूटर के बढ़ते चरण 261
35. दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप **अथवा** युवा पीढ़ी पर दूरदर्शन का प्रभाव 262
36. मानव के लिए विज्ञान-वरदान या अभिशाप **अथवा** विज्ञान के बढ़ते कदम 262
37. समय का सदुपयोग 263
38. जल संरक्षण : हमारा दायित्व **अथवा** जल है तो जीवन है 264
39. अनुशासनपूर्ण जीवन ही वास्तविक जीवन है **अथवा** विद्यार्थी एवं अनुशासन 265
40. वर्तमान की महत्ती आवश्यकता : राष्ट्रीय एकता **अथवा** राष्ट्रीय एकता
अथवा
राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता 265
41. समाज-निर्माण में पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका **अथवा** समाचार-पत्रों का महत्त्व 266
42. कटते जंगल : घटता मंगल 267
43. राजस्थान के मेले 267
44. ऋतुराज वसन्त **अथवा** प्रकृति का सौन्दर्य : वसन्त 268
45. त्योहारों का महत्त्व **अथवा** त्योहार : जनमंगल के आधार 268
46. राजस्थान के प्रमुख पर्वोत्सव **अथवा** राजस्थान के त्योहार 269
47. स्वास्थ्य ही श्रेष्ठ धन है
अथवा
स्वस्थ जीवन सुख का आधार 270
48. भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की चुनौती 270
49. स्वच्छ भारत अभियान **अथवा** राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान 271
50. खुला-शौचमुक्त अभियान 272
51. भारतीय संस्कृति का अनुपम उपहार : योग **अथवा** योग भगाए रोग 272
52. शिक्षा में खेलकूद का महत्त्व **अथवा** जीवन में खेलों का महत्त्व 273
53. राजस्थान के प्रमुख लोकदेवता 274

54. राजस्थान के लोकगीत 274
55. नखरालो राजस्थान 275
56. मेरे सामने घटित भीषण दुर्घटना **अथवा** जीवन की वह चिरस्मरणीय घटना 275
57. गुरुजी जिन्हें मैं भूला नहीं सकता **अथवा** मेरे आदरणीय गुरुजी 276
58. जीवन की वह चिरस्मरणीय यात्रा **अथवा** किसी रोचक यात्रा का वर्णन 277
59. चुनाव का एक दृश्य **अथवा** चुनाव की हलचल 277
60. मेरा प्रिय नेता (युग पुरुष महात्मा गाँधी) 278
61. मेरा प्रिय कवि
अथवा
मेरा प्रिय साहित्यकार : गोस्वामी तुलसीदास 279
62. मेरी प्रिय पुस्तक : रामचरितमानस 279
63. इक्कीसवीं सदी का भारत **अथवा** मेरे सपनों का भारत 280
64. मुझे गर्व मेरे भारत पर **अथवा** मेरा भारत महान् 280
65. यदि मैं भारत का प्रधानमंत्री होता 281
66. पर्यावरण संरक्षण परमावश्यक **अथवा** पर्यावरण संरक्षण के उपाय 282
67. उपभोक्ता और भारतीय संस्कृति **अथवा** उपभोक्ता संस्कृति का बढ़ा कुप्रभाव 282
68. यातायात सुरक्षा **अथवा** सड़क सुरक्षा : जीवन सुरक्षा 283
69. मनोरंजन के आधुनिक साधन 284
70. भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण **अथवा** पर्यावरण संरक्षण : हमारा दायित्व 284
71. युवा वर्ग में असन्तोष–कारण और निवारण 285
72. आदर्श विद्यार्थी 285
73. वर्तमान समस्याएँ एवं निराकरण में युवाओं का योगदान
अथवा
सामाजिक विकास में युवाओं का सहकार 286
74. इलेक्ट्रिक वाहन : आज की आवश्यकता 286
75. सोशल मीडिया का बढ़ता प्रयोग एवं उसका प्रभाव 287

2. पत्र-लेखन (औपचारिक एवं अनौपचारिक पत्र) 288-316

3. विज्ञापन-लेखन 317-330

अपठित बोध

(i) अपठित गद्यांश 331-344

(ii) अपठित पद्यांश 344-355

माध्यमिक परीक्षा, 2024

हिन्दी

समय : 3 घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 80**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।
2. **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।
5. प्रश्न का उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $12 \times 1 = 12$

(i) 'रसिया' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है—
(अ) एरा (ब) इया (स) आर (द) ई

(ii) 'गुण स्वर सन्धि' का सही उदाहरण है—
(अ) रमेश (ब) विद्यालय (स) मतैक्य (द) नीरोग

(iii) 'उत्साह' कविता के कवि हैं—
(अ) नागार्जुन (ब) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
(स) सूरदास (द) जयशंकर प्रसाद

(iv) 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' की भाषा है—
(अ) खड़ी बोली (ब) ब्रज (स) राजस्थानी (द) अवधी

(v) गोपियों ने भ्रमर के बहाने किस पर व्यंग्य बाण छोड़े हैं?
(अ) उद्धव (ब) कृष्ण (स) नंद (द) कंस

(vi) नागार्जुन का जन्म हुआ था—
(अ) बिहार (ब) बंगाल (स) राजस्थान (द) उत्तर प्रदेश

(vii) 'कैप्टन' किसका नाम था?
(अ) चश्मे वाला (ब) पान वाला (स) हालदार साहब (द) नेताजी

(viii) 'लखनवी अंदाज' व्यंग्य के लेखक हैं—
(अ) यशपाल (ब) मन्नू भंडारी (स) स्वयं प्रकाश (द) यतीन्द्र मिश्र

(ix) 'बालगोबिन भगत' पाठ की विधा है—
(अ) व्यंग्य (ब) कहानी (स) रेखाचित्र (द) निबंध

(x) संस्कृति का परिणाम है—
(अ) अपसंस्कृति (ब) सभ्यता (स) अशिष्टता (द) विभाजन

(xi) हमारे समाज में 'नाक' प्रतीक है—
(अ) सुंदरता का (ब) संस्कृति का (स) इज्जत का (द) समाज का

(xii) हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास माना जाता है—
(अ) जॉर्ज पंचम की नाक (ब) देहाती दुनिया (स) आपका बंटी (द) रामचरितमानस

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : $6 \times 1 = 6$

(i) किसी भाव, अवस्था, गुण अथवा दशा के नाम को ..... संज्ञा कहते हैं।
(ii) वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें ..... कहते हैं।
(iii) वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता, उसे ..... क्रिया कहते हैं।
(iv) वे ..... शब्द, जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं।

(v) वे शब्दांश जो किसी शब्द के ..... में लगकर नये अर्थ का बोध करवाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं।

(vi) हिन्दी में उपसर्ग ..... प्रकार के होते हैं।

3. निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $6 \times 1 = 6$

वर्तमान में राष्ट्र को शारीरिक दृष्टि से मजबूत, निर्भय तथा ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो अपने आप में, अपनी शक्ति में विश्वास करते हों। विवेकानन्द की दृष्टि से नास्तिक वह है जो अपने आप में विश्वास नहीं करता। भारत के राष्ट्रीय आदर्श त्याग और सेवा को अपनाकर गरीबों, भूखों और पीड़ितों की सेवा में अपने को अर्पित करना ही राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा है। राष्ट्र भक्ति कोरी भावना नहीं है, उसका आधार विवेक और प्रेम है जिसकी अभिव्यक्ति विवेकपूर्ण कार्य करते हुए बाहरी भेद-भाव को भूलकर हर एक मनुष्य से प्रेम करने में देखी जा सकती है। विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य है, 'उठो, जागो और तब तक रुको नहीं जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये'।

(i) प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(ii) वर्तमान में कैसे युवाओं की आवश्यकता है? 1

(iii) राष्ट्र की सबसे बड़ी सेवा क्या है? 1

(iv) विवेकानन्द के उपदेश का ध्येय वाक्य क्या है? 1

(v) राष्ट्र भक्ति की भावना का आधार किसे माना गया है? 1

(vi) 'आस्तिक' शब्द का विपरीतार्थक शब्द गद्यांश में से छाँटकर लिखिए। 1

4. निम्नलिखित अपठित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $6 \times 1 = 6$

है कौन! विघ्न ऐसा जग में, टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़।
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।
गुण बड़े एक से एक प्रखर, हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेंहदी में जैसे लाली हो, वर्तिका बीच उजियाली हो।
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

(i) प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

(ii) आदमी के मग में कौन नहीं टिक सकता है? 1

(iii) पत्थर कब पानी बन जाता है? 1

(iv) रोशनी किसे नहीं मिलती? 1

(v) पर्वत के पाँव कब उखड़ जाते हैं? 1

(vi) मेंहदी के बीच क्या छिपा है? 1

खण्ड-ब

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए : $7 \times 2 = 14$

5. शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं? 2

6. हालदार साहब ने जब नेताजी की मूर्ति को पहली बार देखा तो उनकी दृष्टि में क्या बात खटकती थी? 2

7. छोटे बच्चे की मनोहारी मुसकान देखकर कवि के मन में क्या भाव उमड़ते हैं?-'यह दंतुरित मुसकान' कविता के आधार पर समझाइए। 2

8. 'उत्साह' कविता का मूल भाव लिखिए। 2

9. गैंगटॉक शहर को देखकर लेखिका को क्या अनुभूति हुई? 2

10. साँप निकलने पर पानी फेंकते बच्चों की क्या प्रतिक्रिया हुई? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर समझाइए। 2

11. 'नमक-मिर्च लगाना' मुहावरे का अर्थ बताते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए। 2

खण्ड-स

12. निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए : $4 \times 1 = 4$

आग के आविष्कार में कदाचित पेट की ज्वाला की प्रेरणा एक कारण रही। सूई-धागे के आविष्कार में शायद शीतोष्ण से बचने तथा शरीर को सजाने की प्रवृत्ति का विशेष हाथ रहा। अब कल्पना कीजिए उस आदमी की जिसका पेट भरा है, जिसका तन ढँका है, लेकिन जब वह खुले आकाश के नीचे सोया हुआ रात के जगमगाते तारों को देखता है, तो उसको केवल इसलिए नींद नहीं आती क्योंकि वह यह जानने के लिए परेशान है कि आखिर यह मोती भरा थाल क्या है? पेट भरने और तन ढँकने की इच्छा मनुष्य की संस्कृति की जननी नहीं है। पेट भरा और तन ढँका होने पर भी ऐसा मानव जो वास्तव में संस्कृत है, निठल्ला नहीं बैठ सकता।

(i) आग के आविष्कार में क्या प्रेरणा रही होगी? 1
(ii) शरीर को सजाने की प्रवृत्ति किसके आविष्कार का कारण बनी? 1
(iii) खुले आकाश के नीचे सोए व्यक्ति को नींद क्यों नहीं आती? 1
(iv) वास्तव में संस्कृत मानव क्या नहीं कर सकता? 1

अथवा

आजाद हिंद फौज के मुकदमे का सिलसिला था। सभी कॉलिजों, स्कूलों, दुकानों के लिए हड़ताल का आह्वान था। जो-जो नहीं कर रहे थे, छात्रों का एक बहुत बड़ा समूह वहाँ जा-जाकर हड़ताल करवा रहा था। शाम को अजमेर का पूरा विद्यार्थी वर्ग चौपड़ (मुख्य बाजार का चौराहा) पर इकट्ठा हुआ और फिर हुई भाषणबाजी।

(i) हड़ताल का आह्वान किस सिलसिले में किया गया था? 1
(ii) जो हड़ताल नहीं कर रहे थे उनके प्रति क्या प्रतिक्रिया थी? 1
(iii) शाम को विद्यार्थी वर्ग कहाँ इकट्ठा हुआ? 1
(iv) विद्यार्थियों के इकट्ठा होने के बाद क्या हुआ? 1

13. प्रस्तुत पठित पद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : $4 \times 1 = 4$

ऊधौ, तुम हो अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माँह तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।

(i) गोपियों ने किसे बड़भागी कहा है? 1
(ii) उसे बड़भागी क्यों कहा गया है? 1
(iii) 'पुरइनि पात' से क्या अभिप्राय है? 1
(iv) तेल की गागरि पानी में डुबोने पर क्या होता है? 1

अथवा

मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ देखो कितनी आज घनी।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास
यह लो, करते ही रहते हैं अपना व्यंग्य-मलिन उपहास

(i) मधुप गुन-गुना कर क्या कह रहा है? 1
(ii) पत्तियाँ क्यों गिर रही हैं? 1
(iii) अनंत नीलिमा में क्या छिपा है? 1
(iv) 'व्यंग्य-मलिन उपहास' से क्या तात्पर्य है? 1

14. ''हालदार साहब भावुक हैं। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।''
हालदार साहब की आँखें क्यों भर आईं? 'नेताजी का चश्मा' पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए।
(उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

अथवा

'लखनवी अंदाज' व्यंग्य में लेखक ने किस वर्ग पर कटाक्ष किया है? (उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

15. ''सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।'' पंक्ति के आधार पर बताइए परशुराम ने राम के किस कार्य को शत्रु के कार्य के समान बताया है? (उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

अथवा

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' रचित कविता 'अट नहीं रही है' में वर्णित फागुन की मादकता का वर्णन कीजिए। (उत्तर सीमा लगभग 50-60 शब्द) 3

16. तुलसीदास जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व के बारे में लिखिए। (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 4

अथवा

यशपाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में लिखिए। (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 4

खण्ड-द

17. ''जाने कितना ऋण है हम पर इन नदियों का, हिम शिखरों का।'' 'साना-साना हाथ जोड़ि'-पाठ के आधार पर बताइए कि मणि ने ऐसा क्यों कहा होगा? (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 4

अथवा

'एक दिन मैंने हिरोशिमा पर कविता लिखी-जापान में नहीं, भारत लौटकर रेलगाड़ी में बैठे-बैठे।' अज्ञेय ने हिरोशिमा में तत्काल कुछ न लिखकर, भारत लौटने पर कविता क्यों लिखी? (उत्तर सीमा लगभग 60 शब्द) 4

18. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 6

(1) कन्या भ्रूण-हत्या — सामाजिक अभिशाप

(i) प्रस्तावना
(ii) कन्या भ्रूण-हत्या के कारण
(iii) कन्या भ्रूण-हत्या के दुष्परिणाम
(iv) कन्या भ्रूण-हत्या रोकने के उपाय
(v) उपसंहार

(2) शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल की उपयोगिता

(i) प्रस्तावना
(ii) मोबाइल का शिक्षा के क्षेत्र में उपयोग
(iii) मोबाइल प्रयोग के दुष्परिणाम
(iv) छात्रों पर मोबाइल का प्रभाव
(v) उपसंहार

(3) बढ़ता ध्वनि प्रदूषण

(i) प्रस्तावना
(ii) ध्वनि प्रदूषण का अर्थ
(iii) ध्वनि प्रदूषण के कारण व दुष्परिणाम
(iv) ध्वनि प्रदूषण रोकने के उपाय
(v) उपसंहार

(4) मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

(i) प्रस्तावना
(ii) घटना का वर्णन
(iii) घटना के अविस्मरणीय होने का कारण
(iv) उपसंहार

19. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, नाहरपुरा का छात्र राहुल मानकर अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य से विद्यालय में पुस्तकालय सप्ताह मनाए जाने हेतु प्रार्थना पत्र लिखिए। 4

अथवा

स्वयं को रामगढ़ निवासी अर्जुन मानते हुए अपने मित्र राकेश को जीवन में अनुशासन का महत्त्व बताते हुए एक पत्र लिखिए। 4

20. महिला उद्यमिता केन्द्र द्वारा बनाये गए अचार व पापड़ की बिक्री हेतु एक विज्ञापन लिखिए। 4

अथवा

विद्यालय में छात्रों द्वारा अनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी देखने के लिए एक विज्ञापन लिखिए। 4

———————

हिन्दी कक्षा X
क्षितिज भाग-2

काव्य-खण्ड

1. सूरदास

कवि-परिचय—भक्त प्रवर 'सूरदास' भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्ण भक्त कवि हैं। इनका जन्म सन् 1478 में माना जाता है। एक मान्यता के अनुसार उनका जन्म मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ, जबकि दूसरी मान्यता के अनुसार उनका जन्म-स्थान दिल्ली के पास 'सीही' गाँव में माना जाता है। उन्होंने सगुण उपासना का प्रतिपादन किया। इनकी तीन रचनाएँ मानी जाती हैं—'सूरसागर', 'साहित्य लहरी' और 'सूर-सारावली'। जिसमें 'सूरसागर' सर्वाधिक प्रसिद्ध है। 'सूरदास' का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। वे हिन्दी के रससिद्ध कवि हैं। उन्होंने कृष्ण को आराध्य मानकर उनकी बाल-लीलाओं, रूप-छवि, संयोग-वियोग, शृंगार तथा भक्ति से सम्बन्धित हजारों पदों की रचना की है। इनके 'भ्रमर गीत' में सगुण भक्ति का सुन्दर प्रतिपादन हुआ है। पुष्टिमार्गीय अष्टछाप के कवियों में सूरदास की गणना सर्वप्रथम की जाती है। ये मथुरा में गऊघाट पर रहकर श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन-कीर्तन करते थे। आपकी भक्ति सख्य भाव की है। (जिसमें भगवान के साथ भक्त का 'सखा भाव' रहता है।) आप वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्य थे। सन् 1583 में पारसौली में उनका देहान्त हो गया।

भाषा-शैली—मूलतः सूर वात्सल्य, शृंगार व भक्ति के श्रेष्ठ कवि माने गए हैं। आपकी कविता में ब्रजभाषा के परिष्कृत एवं परिमार्जित रूप का प्रयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पदों में कोमलकांत मधुर पदावली, सरल पदविन्यास, मधुर भाव व्यंजना तथा गेयता का तत्त्व विद्यमान है। रस-अलंकारों का प्रयोग भाषा में विशिष्ट बोध कराने वाला है। मन की तरल भावानुभूतियों का मनमोहक और आकर्षक चित्र अन्यत्र दुर्लभ है।

पाठ-परिचय—पाठ में संकलित चारों पद 'भ्रमरगीत' से लिए गये हैं। जिसमें उद्धव-गोपी संवाद के माध्यम से ज्ञान-योग का खण्डन तथा प्रेम-भक्ति का समर्थन किया गया है। गोपियों ने भ्रमर के ब्याज से उद्धव को खरी-खोटी सुनाईं, कृष्ण की भ्रमरवृत्ति पर आक्षेप किए हैं। यह उपालम्भ काव्य है जिसमें नायक की निष्ठुरता के साथ-साथ नायिका की मूक व्यथा, विरह वेदना का मार्मिक चित्रण भी मिलता है। पहले पद में गोपियाँ उद्धव को सौभाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कभी प्रेम के बंधन में नहीं बंधे और न उन्होंने प्रेम के वास्तविक अर्थ को जाना है। ये तो हमीं नासमझ हैं जो कृष्ण-प्रेम में ऐसे लिपट गईं जैसे गुड़ से चींटी लिपट जाती है। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन की आस मन में ही रह गयी, कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। तीसरे पद में गोपियाँ उद्धव की योग-साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर कृष्ण के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास व्यक्त करती हैं। चौथे पद में कटाक्ष करते हुए कहती हैं कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। वे हमें योग-मार्ग अपनाने की बात कहकर हम पर अन्याय कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार राजधर्म के विपरीत है।

कठिन शब्दार्थ, भावार्थ एवं अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न

पद

(1)

ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न त्यागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी॥

कठिन-शब्दार्थ–बड़भागी = भाग्यशाली। **अपरस** = अछूता, अलिप्त। **तगा** = धागा। **नाहिन** = नहीं। **अनुरागी** = प्रेम में डूबा। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **दागी** = दाग, धब्बा। **माहँ** = भीतर, में। **गागरि** = गगरी, कलशी। **ताकौ** = उसको। **प्रीति** = प्रेम। **पाउँ** = पैर। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मोहित हुई। **अबला** = स्त्री, दुर्बल मन वाली। **भोरी** = भोली। **गुर** = गुड़। **पागी** = लिपटी हुई।

भावार्थ–गोपियाँ उद्धव की प्रेमहीनता पर व्यंग्य कर कहती हैं कि हे उद्धव! तुम सचमुच बड़े भाग्यशाली हो, क्योंकि तुम कभी प्रेम के धागे से नहीं बँधे हो, अर्थात् प्रेम-बन्धन से सर्वथा मुक्त हो। तुम प्रेम-बंधन से उसी प्रकार सर्वथा मुक्त रहते हो, जिस प्रकार कमल का पत्ता जल में रहते हुए भी उसके स्पर्श से निर्लिप्त रहता है। अर्थात् उस पर जल की बूँद भी नहीं ठहर पाती। अथवा तेल की मटकी को जल के भीतर डुबाने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। इसी प्रकार तुम भी प्रेम-रूप कृष्ण के हमेशा पास रहते हुए भी उनके प्रेम-भाव से मुक्त ही रहे, और उसका तनिक भी आस्वाद नहीं पा सके। उनके प्रभाव से हमेशा मुक्त बने रहते हो।

गोपियाँ कहती हैं कि तुमने आज तक कभी भी प्रेम-नदी में अपना पैर तक नहीं डुबोया। अर्थात् कभी प्रेम के पास तक नहीं फटके और तुम्हारी दृष्टि किसी के रूप को देखकर उस पर मोहित नहीं हुई है। परन्तु हम तो भोली-भाली अबलाएँ हैं, जो अपने प्रियतम की रूप माधुरी पर उसी प्रकार आसक्त होकर उसके प्रेम में पग गई हैं, जैसे चींटी गुड़ पर आसक्त होकर उसके ऊपर चिपक जाती है और फिर उससे अलग नहीं हो पाती है और वहीं अपने प्राण दे देती है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) गोपियों ने उद्धव को बड़भागी क्यों कहा है?

(ख) 'ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) गोपियों ने स्वयं को अबला क्यों कहा है?

(घ) 'पागी' शब्द का अर्थ क्या है?

उत्तर–(क) गोपियाँ व्यंग्य में उद्धव को 'बड़भागी' अर्थात् भाग्यशाली मानती हैं, क्योंकि वे कृष्ण के समीप रहकर भी प्रेम के बंधन में नहीं बंधे और न ही उनकी विरह वेदना को कभी जाना।

उत्तर–(ख) जिस प्रकार तेल से चिकने घड़े को पानी में डुबोने पर भी जल की बूँद उस पर ठहर नहीं पाती, उसी प्रकार हे उद्धव! तुम भी कृष्ण प्रेम से अछूते रहे हो।

उत्तर–(ग) गोपियों ने स्वयं को अबला कहकर कृष्ण के प्रति अपनी आसक्ति और प्रेम को व्यक्त किया है।

उत्तर–(घ) 'पागी' शब्द का अर्थ है 'मोहित होना'।

(2)

मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही॥

कठिन-शब्दार्थ–माँझ = मध्य, में। **अवधि** = समय। **अधार** = आधार, सहारा। **आस** = आशा। **आवन की** = आने की। **बिथा** = पीड़ा। **दही** = जलना। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **बही** = बहना। **धीर** = धैर्य। **धरहिं** = रखें, धारण करें। **मरजादा** = मर्यादा। **लही** = ग्रहण।

भावार्थ–सूरदास जी गोपियों की विरह व्यथा को व्यक्त करते हुए उनकी दयनीय दशा को बता रहे हैं। कृष्ण ने योग संदेश गोपियों को देने के लिए तथा उनका प्रेम भूलने के लिए उद्धव को भेजा था। जहाँ उद्धव को गोपियाँ कहती हैं कि हमारे मन की बातें हमारे मन में ही रह गई क्योंकि हम कृष्ण को अपने हृदय का प्रेम व्यक्त कर पाते उससे पहले ही वे हमें छोड़कर चले गए। इसलिए हे उद्धव! अब हम अपनी बातें किससे और कैसे जाकर कहें? अब तक तो हमें कृष्ण के आने की आशा थी इसलिए उनके प्रेम से प्राप्त तन-मन की पीड़ा को सहन कर रही थीं। लेकिन अब इस योग संदेश को सुन-सुन हमें हमारा विरह और भी जलाने लगा है। अर्थात् प्रेम में डूबी गोपियों को जब योग धारण करने का संदेश प्राप्त होता है तो वे और अधिक विरह में जलने लगती हैं। गोपियाँ आगे कहती हैं कि हम अगर चाहतीं तो आवाज लगाकर कृष्ण को बुलातीं और वे इस विरह अग्नि को अपनी प्रेम-धारा से तत्क्षण ही बुझा देते अर्थात् अपनी प्रेम-धारा

बहा देते, लेकिन जब श्रीकृष्ण ने ही अपनी मर्यादा को त्याग दिया है तब हम किस प्रकार धैर्य धारण रखें? तात्पर्य यह है कि कृष्ण ने प्रेम में हमसे छल किया है तो हम अब कैसे शान्त रह सकती हैं।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) ''मन की मन ही माँझ रही।'' गोपियों की मन की इच्छा मन में ही क्यों रह गई?

(ख) गोपियों की विरह-व्यथा और अधिक क्यों बढ़ गई है?

(ग) गोपियाँ किस आशा पर विरह के कष्ट को सहन कर रही थीं?

(घ) 'नाहीं परत कही' में गोपियाँ अपनी व्यथा क्यों नहीं कह पा रही हैं?

उत्तर–(क) गोपियों के मन की इच्छा (प्रेम-भावना) उनके मन में इसलिए दब कर रह गयी, क्योंकि कृष्ण उन्हें छोड़कर मथुरा चले गये और लौटने की बजाय उद्धव द्वारा योग-संदेश भेज दिया।

उत्तर–(ख) कृष्ण द्वारा भेजे गए योग-संदेश को सुनकर उनकी विरह-व्यथा और अधिक बढ़ गयी।

उत्तर–(ग) गोपियाँ कृष्ण मिलन को अपने जीवन का आधार बनाये हुए थीं और उनके लौटने की अवधि का एक-एक दिन गिनते हुए वियोग की व्यथा सह रही थीं।

उत्तर–(घ) गोपियाँ यह सोचकर व्याकुल हैं कि वे अपनी विरह व्यथा किसे सुनाएँ? उद्धव को सुनाने से कोई लाभ नहीं क्योंकि वे ज्ञानमार्गी होने के कारण उनकी व्यथा को समझने में असक्षम हैं।

(3)

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जक री।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी॥ **(माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2022)**

कठिन-शब्दार्थ–हारिल = एक पक्षी विशेष जो हमेशा अपने पंजों में कोई न कोई लकड़ी का टुकड़ा या तिनका पकड़े रहता है। **क्रम** = कर्म। **उर** = हृदय। **दृढ़** = मजबूती से। **करी** = अनुभव किया। **जक** = रटन, धुन। **करुई** = कड़वी। **ककरी** = ककड़ी। **ब्याधि** = बीमारी। **चकरी** = चंचल, चकई के समान सदैव अस्थिर रहने वाला। **तिनहिं** = उनको। **हरि** = कृष्ण। **लकरी** = लकड़ी का टुकड़ा। **नंद-नंदन** = श्रीकृष्ण। **दृढ़ करि** = कस कर। **पकरी** = पकड़ी। **स्वप्न** = सपना। **दिवस** = दिन। **निसि** = रात।

भावार्थ–कृष्ण के प्रति अपने दृढ़ प्रेम का वर्णन करती हुई गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे लिए तो कृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी के समान बन गए हैं। अर्थात् जिस प्रकार हारिल पक्षी हर समय अपने पंजों में लकड़ी या तिनके को पकड़े रहता है, उसी प्रकार हम भी निरन्तर अपने कृष्ण का ध्यान करती रहती हैं। हमने मन, वचन और कर्म से नंदनन्दन अर्थात् नंद के पुत्र कृष्ण के रूप और उनकी स्मृति को दृढ़ता से अपने हृदय में धारण किया है। अब हम स्वयं चाह कर भी इन स्मृतियों से मुक्त नहीं हो सकती हैं। हमारा मन जागते-सोते चाहे किसी भी दशा में क्यों न हो; हमेशा ही कृष्ण-कृष्ण की रट लगाये रहता है। अर्थात् उन्हीं का ध्यान करता रहता है।

गोपियाँ कहती हैं कि हे भ्रमर! तुम्हारी योग की बातें सुनते ही हमें ऐसा लगता है कि मानो हमने कड़वी ककड़ी खा ली हो। अर्थात् तुम्हारी ये योग की बातें हमें नितान्त अरुचिकर लगती हैं। तुम तो हमारे लिए योग के रूप में ऐसी मुसीबत ले आए हो जिसे हमने न तो कभी देखा, न सुना और न कभी अनुभव ही किया है। अर्थात् हम तुम्हारी इस योग रूपी बीमारी से पूरी तरह अपरिचित हैं। इसलिए इस बीमारी को तुम उन लोगों को जाकर दो जिनके मन चकई के समान हमेशा चंचल रहते हैं अर्थात् अस्थिर रहते हैं। हमारी चित्तवृत्ति तो पहले से ही कृष्ण-प्रेम में स्थिर हो चुकी है, इसलिए तुम्हारा यह योग हमारे लिए व्यर्थ है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) गोपियों ने कृष्ण को किसके समान कहा और क्यों?

(ख) कृष्ण के प्रति अपने दृढ़ प्रेम का वर्णन करते हुए गोपियों ने उद्धव से क्या कहा?

(ग) गोपियों को उद्धव द्वारा दिया गया योग संदेश कैसा लगता है और क्यों?

(घ) 'यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–(क) गोपियों ने कृष्ण को हारिल की लकड़ी के समान कहा है, क्योंकि 'हारिल' पक्षी की लकड़ी के प्रति और गोपियों की कृष्ण के प्रति दृढ़ता समान है।

उत्तर–(ख) गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! हमारे लिए तो कृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी के समान बन गए हैं। हमने मन, वचन और कर्म से नंदनन्दन रूपी लकड़ी को अर्थात् कृष्ण के रूप और उनकी स्मृति को अपने मन द्वारा कस कर पकड़ लिया है।

उत्तर–(ग) गोपियों को उद्धव द्वारा दिया योग-संदेश कड़वी ककड़ी जैसा अप्रिय और कष्टदायक लगता है क्योंकि यह संदेश गोपियों के मन को निराशा और कष्ट से भर रहा है।

उत्तर–(घ) गोपियों ने उद्धव के योग संदेश को एक ऐसी बीमारी बताया है जिसके बारे में उन्होंने न कभी देखा है और न ही अनुभव किया है। गोपियों ने उद्धव से कहा कि अपना योग-संदेश उनको सुनायें जिनके मन चंचल और चलायमान हैं।

(4)

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए॥

कठिन-शब्दार्थ–पढ़ि आए = सीख आए। **मधुकर** = भ्रमर, उद्धव। **पठाए** = भेजे। **आगे के** = पहले के। **डोलत धाए** = दौड़ते फिरना। **फेर पाइहैं** = फिर से पा लेंगी। **आपुन** = स्वयं। **हुते** = थे। **ग्रन्थ** = पुस्तक, राजनीतिशास्त्र। **परहित** = परोपकार। **हुते चुराए** = चुरा लिए था। **अनीति** = अन्याय। **जे** = जिन्होंने। **छुड़ाए** = बचाए। **जाहिं सताए** = सताया।

भावार्थ–गोपियाँ कृष्ण द्वारा भेजे गये योग-सन्देश को सुनकर कहती हैं—हे उद्धव! एक तो कृष्ण पहले से ही चतुर थे और अब गुरु से राजनीतिशास्त्र भी पढ़ लिया है। उनकी बुद्धि कितनी विशाल है, इसका अनुमान तो इसी बात से मिल गया है कि वे युवतियों के लिए योग-साधना करने का सन्देश भिजवा रहे हैं। अर्थात् इससे यह प्रमाणित हो गया है कि वे बुद्धिमान न होकर मूर्ख हैं, क्योंकि कोई मूर्ख ही प्रेमी युवतियों के लिए योग-साधना को उचित मान सकता है, बुद्धिमान नहीं।

गोपी कहती है कि हे सखि! पुराने जमाने में सज्जन पुरुष दूसरों की भलाई करने के लिए इधर-उधर दौड़ते फिरते थे और यह आज के सज्जन पुरुष उद्धवजी हैं जो दूसरों को दु:ख देने और सताने के लिए यहाँ तक दौड़े चले आए हैं। हम तो केवल इतना ही चाहती हैं कि हमें हमारा मन फिर मिल जाए जिसे कृष्ण यहाँ से जाते समय चुपचाप चुराकर अपने साथ ले गये थे। परन्तु कृष्ण जैसे लोगों से ऐसे न्यायपूर्ण कार्य की आशा कैसे की जा सकती है। अर्थात् हमारी रीति तो कृष्ण से प्रेम करने की थी और कृष्ण चाहते हैं कि हम अपनी इस रीति को त्यागकर, उनसे प्रेम करना छोड़, योग-साधना को अपना लें। यह उनका सरासर अन्याय है। सूरदास के वर्णनानुसार गोपियाँ कहने लगीं कि सच्चा राजधर्म तो उसी को माना गया है जिसके अन्तर्गत प्रजाजनों को कभी भी सताया न जाए। अर्थात् कृष्ण अपना स्वार्थ साधने के लिए हमारे सुख-चैन को हमसे छीनकर हमें दु:खी करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह उनकी उसी कुटिल राजनीति का ही एक अंग है।

अर्थग्रहण सम्बन्धी प्रश्न–

(क) 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' इस पद में गोपियाँ कृष्ण के किस रूप का वर्णन कर रही हैं?

(ख) गोपियों के अनुसार अनीति क्या है?

(ग) उपर्युक्त पद में गोपियों की कौन-सी विशेषता प्रकट हो रही है?

(घ) पहले के भले लोगों का कैसा स्वभाव होता था?

उत्तर–(क) इस पद में गोपियाँ कृष्ण के राजनीतिज्ञों जैसी चालें चलने वाले रूप का वर्णन कर रही हैं, क्योंकि गोपियों को आभासित होने लगा है कि कृष्ण का मन उनके प्रेम से विरक्त हो गया है।